International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 43-46

हिंदी कहानी का विकास सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में

डॉ0 अनुपमा छाजेड़

श्री उमिया कन्या महाविद्यालय, रंगवासा, राऊ

सारांश

साहित्य विधाओं का अमूल्य भण्डार है। इन विधाओं में कहानी को मूर्धन्य स्थान प्राप्त है। साहित्य की समस्त विधाओं में यहीं एक ऐसी विधा है जो पाठक का चरम अनुरंजन करने के साथ साथ एक चिरन्तन रस का उदघाटन करने में प्रयत्नशील रहती है एवं साथ ही सफल भी होती है। अर्थात अल्पसमय में मनोरंजन एवं ज्ञान की उपलब्धि केवल कहानी द्वारा ही संभव है। आज का युग मशीनरी का युग है, प्रत्येक व्यक्ति कम समय में अधिक लाभ लेना चाहता है। अतः इस युग में कहानी की सफलता का मुख्य कारण मनुष्य की व्यस्तता है। कहानी के अंकुर हम सभी में विद्यमान है इसलिए कहानी की परम्परा कभी विनष्ट नहीं हुई और लगातार वृद्धि कर रहीं है युगों से प्रगति पथ पर अग्रसर, नित्य परिवर्तनशील एवं नवीन आभायुक्त कहानी को भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता रहा है भारत में इसे दंतकथा, कादम्बरी, हितोपदेश, कहानी, कथा, लघुकथा, वार्ता आदि।अंग्रेजी में इसे स्टोरी कहते हैं।

मूल शब्दः कथानक, प्रसाद युग, प्रेमचंद युग, प्रगतिवादी युग, नई कहानी युग।

प्रस्तावना

हिन्दी में कहानी शब्द की व्युत्पत्ति ''कथानक'' शब्द से मानी जाती है।[1] कहानी की कोई परिभाषा आज तक सर्वसम्मत नहीं हो सकी है क्योकि वह विकसनशील विधा है। कहानी की प्रगति प्रत्येक क्षण में निरन्तर नवीनता प्राप्त कर रहीं है। अतः इसका स्वरूप ''क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति'' वाला है इसीलिए आलोचक उसके स्वरूप को रूपायित करने में अभी सफल नहीं हो सके हैं। अतः यही कहना समुचित प्रतीत होता है कि –

लखना बैठी जाकी छवी, गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के, चतुर चितेरे क्रूर।

कुछ भारतीय विद्वानों द्वारा प्रदत्त परिभाषाएँ निम्न हैं–

प्रेमचन्द

''कहानी (गल्प)एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथाविन्यास सब उसी भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भांति उसमें मानव जीवन का सम्पूर्ण वृहद रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता है।प्रेमचन्दजी ने कहानी को संगीत का एक रूपक देते हुए कहा है कि ''यह वह धुपद है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी पूर्ण प्रतिभा का परिचय देता है। अतः कहानी एक ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमे'' भांति –भांति के फुल, बेल–बूटे सजे हुए हैः बल्कि एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है।''

जयशंकरप्रसाद

जयशंकर के विचारों में ''कहानी का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा रस सृष्टि करना है।'' प्रसाद के अनुसार–''कहानी पत्थर पर अंकित अमिट रेखा के समान हृदय पर अंकित स्मृति रेखा है।''

डॉ0 श्यामसुन्दरदासः– डॉ. श्यामसुन्दरदास ने कहानी को आख्यायिका कहते हुए अपने विचार व्यक्त किये हैं कि ''आख्यिका एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर नाटकीय आख्यान है।''

बाबू गुलाबराय

बाबू जी का मत है कि ''छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है, जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केन्दित घटना या घटनाओं के आवश्यक उत्थान पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला वर्णन हो।''

इलाचंद जोशी

उपन्यास एवं कहानीकार इलाचंद जोशी के विचार से ''जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष में उल्टा–सीधा चलता रहता है। इस चक्र की किसी विशेष परिस्थिति की क्षणिकगति को प्रदर्शित करके, हृदय के भावों की किसी विशेष अवस्था केरंगों को रंजित करने में ही कहानी की विशेषता है।

अज्ञेय

आधुनिक कहानीकारों के प्रमुख अज्ञेय के अनुसार ''कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी, एक शिक्षा है जो उम्रभर मिलती है, और समाप्त नहीं होती है'' अतः कहानी जीवन संघर्ष का ही प्रतिफल है, जो मानव के मस्तिष्क में नित्य ही गतिमान रहती है। तथा समाज व समाज में होने वाले परिवर्तन की कही न कही उत्तरदायी भी है।

कहानी को विश्व साहित्य की प्राचीनतम विद्या कहा जा सकता है, उसका अविष्कार मनुष्य ने तभी कर लिया जब उसे फुसलाने–बहलाने या प्रेरित करने की आवश्यकता महसूस हुई होगी, अर्थात् भाषा के अविष्कार से भी पहले, संकेतों अनुभवों आदि के द्वारा कहानी का प्रचलन रहा होगा। भारतवर्ष में कथा कहानियो का इतिहास सहस्त्रो वर्ष पुराना है। इसका प्रारम्भ उपनिषदों की रूपक कथाओ, महाभारत के उपाख्यानों तथा बौद्ध साहित्य की जातक कथाओ से प्राप्त होता है भारतवर्ष में कथा साहित्य के विकास के मुख्या तीन युग है। इसका प्रारम्भ उपनिषदों की रूपक कथाओ, महाभारत के उपाख्यानों तथा बौद्ध साहित्य की जातक कथाओ का उल्लेख मिलता है।[2] ऐतिहासिक दृष्टि से इन कथाओ का महत्त्व बहुत अधिक है, परंतु साधारण जनता कहानी को जिस अर्थ में ग्रहण करती है उस अर्थ में उन कहानियो का महत्त्व उतना अधिक नहीं है, क्योंकि उनका उद्देश्य मनोरंजन नहीं था, वरन कहानी के

रूप में किसी गंभीर तत्व की आलोचना अथवा नीति और धर्म की शिक्षा हो इनका एकमात्र ध्येय था। कथा साहित्य के विकास का दूसरा युग तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में होता है, जब उत्तर भारत में मुसलमानों का आधिपत्य फैल गया। भारत में मुसलमानों की संख्या बढ़ती ही गयी। वे अपने साथ अपनी एक संस्कृति एवं कथा कहानियों की एक समृद्ध परंपरा ले आये। हिन्दू और मुसलमान दो महँ जातियों के परस्पर संपर्क और आदान प्रदान से एक नए धर्म और समाज, कला और संगीत, साहित्य और संस्कृति का विकास हुआ, उसी प्रकार अथवा उससे कही अधिक विकास कथा कहानियों का संपर्क साधारण जनता का संपर्क था किसी वर्ग विशेष का नहीं। साहित्य में उसका उल्लेख नहीं मिलता फिर भी प्रेम मार्गी सूफी कवियों के प्रेमाख्यानों तथा लोक प्रचलित अकबर और बीरबल के नाम से प्रसिद्ध विनोदपूर्ण कथायों में इस परंपरा का कुछ आभास मिल जाता है तत् पश्चात् आधुनिक युग आया। आधुनिक युग के आते ही हिंदी कहानियों का वास्तविक शुभारम्भ हुआ।

वस्तुतः सन 1900 ई० से 1915 ई० तक हिन्दी कहानी के विकास का पहला दौर था। मन की चंचलता (माधवप्रसाद मिश्र) 1907 ई० गुल –बहार (किशोरीलाल गोस्वामी) 1902 ई०, पंडित और पंडिंतानी (गिरिजा–दत्त वाजपेयी) 1903 ई०, ग्यारह वर्ष का समय (रामचंद्र शुक्ल) 1903 ईं०, दुलाई वाली (बंग–महिला) 1907 ई०, विद्या बहार (विद्यानाथ शर्मा) 1909 ई०, राखीबंद भाई (वृन्दावन–लाल वर्मा) 1909 ई०, ग्राम (जयशंकर प्रसाद) 1911 ई०, सुखमय जीवन (चंद्रधर शर्मा गुलेरी) 1911 ई०, रसिया बालम (जयशंकर प्रसाद) 1912 ई०, परदेसी (विश्वम्भरनाथ जिज्जा) 1912 ई०, कानों में कंगना (राजराधिकारमणप्रसाद सिंह) 1913 ई०, रक्षाबंधन (विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक) 1913 ई०, उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी) 1915 ई०, आदि के प्रकाशन से सिद्ध होता है कि इस प्रारंभिक काल में हिन्दी कहानियों के विकास के सभी चिन्ह मिल जाते हैं। 1950 तक हिन्दी कहानी का एक विस्तृत दौर समाप्त हो जाता है और हिन्दी कहानी परिपक्वता के दौर में प्रवेश करती है। समाज शब्द की परिधि बड़ी व्यापक व विस्तृत है सम्यक एक व्यूह के समान है। इसमें विभिन्न प्रकार के व्यक्ति अपनी अभिरुचियों एवं कुशलताओं से सामान रूप से इसके रक्षण में लगे है। अतः सभी का मूल्य भी सामान ही होगा।3समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के द्वारा पहचान जाता है। प्राचीनकाल से ही कहानी ने समाज पर अच्छा प्रभाव डाला है। प्राचीनकाल की कहानियों में सत् की असत् पर विजय बता कर आदर्श स्थापित किया जाता था। आधुनिक कहानी भी प्राचीन कहानियों के आदर्शों पर चलती रही एवं आधुनिक कहानी ने भी सत् को कभी पीछे नही छोड़ा।

आधुनिक कहानी का विभाजन 4 भागों में किया जा सकता हैः–

(१) प्रसाद युग
(२) प्रेमचंद युग
(३) प्रगतिवादी युग
(४) नई कहानी युग

१. प्रसाद युग

इस काल में इंदु व सरस्वती आदि पत्रिकाओं का अमूल्य योगदान रहा। ''ग्राम'' नामक कहानी जो जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी मानी जाती है जो कि ''इंदु'' पत्रिका में सन् 1911 में प्रकाशित हुई थी। हिन्दी की श्रेष्ठतम कहानी ''उसने कहा था'' सरस्वती में प्रकाशित हुई। गुलेरीजी ने सिर्फ तीन कहानियों की रचना की है परन्तु इन कहानियों ने इन्हें कहानीकारों का सिरमौर बना दिया। इनकी कहानियों में इनका मर्मस्पर्शी प्रभाव स्पष्ट झलकता है।जयशंकर प्रसाद जी की कहानियाँ हिन्दी कथा साहित्य में विशिष्ट स्थान की अधिकारिणी है। उनकी सृष्टि काव्य और नाटक की परिष्कृत भावनाओं में हुई है। कहानी कला की सामान्य सीमा में नहीं। इतिहास के संदर्भ'' में समाज की वस्तु स्तिथि का सतर्क अवलोकन तथा काव्य सुलभ भावुकता के साथ कवि का निगूढ़ जीवन–दर्शन इन कहानियों में सरल, स्वाभाविक व प्रेषणीय रूप में प्रस्फुटित हुआ है। इसमें प्रसाद जी का दृष्टिकोण आदर्शवादी लक्ष्य प्रगतिशील है।4ग्राम कहानी प्रथम मौलिक व यथार्थवादी कहानी हैं।अधिकांश कहानियों के विषय प्रेम परक हैं। जिनमें प्रेम के उच्च आदर्शों की अभिव्यंजना हुई है। करुणा की पुकार, गुदडी के लाल आदि कहानियॉ मार्मिक भावो से युक्त है।सहयोग में स्त्री – पुरुष के आदर्श दाम्पत्य जीवन की और पाप और पराजय में सतवृत्तियों और पाश्विक वृत्तियो की अभिव्यंजना हुई हैं। आकाशदीप,ममता स्वर्ण के खण्डहर' ऐतिहासिक कहानियाँ है। इनमें इतिहास के उन्ही दृश्यों को लिया गया है, जो भावो की अभिव्यक्ति में सहायक है। 5 अतः इस काल में मुख्यतः चार प्रकार की कहानियों का प्रणयन हुआ।

1. भावुकता प्रधान आदर्शवादी कहानियाँ (प्रसाद व राजा राधिकारमन सिंह)
2. पारिवारिक घटना–प्रधान कहानियाँ (विश्वम्भरनाथ कौशिक व ज्वालादत्त)
3. यथार्थवादी कहानियाँ (चतुरसेन शास्त्री व गुलेरीजी)
4. हास्य रस कहानियों (जे. पी. श्रीवास्तव व विश्वम्भरनाथ)

२. प्रेमचन्द युग

प्रेमचन्द के आगमन के समय दो विरोधी धाराएं प्रमुख रूप से हिन्दी कहानियों में चल रही थी। पहली व प्रमुख धारा थी ''प्रसाद'' की आदर्शपूर्ण कल्पना और रोमेटिज्म से भरी हुई तथा दूसरी धारा थी घटना प्रधान जासूसी कहानियों की जिसमें प्रमुख कहानीकार थे गोपालराम गहमरी। जासूसी कहानियों मैं जिज्ञासा तृप्ति होती थी तो प्रसाद की कहानियों में काव्य का आनन्द प्राप्त होता था। दोनों विषय अत्यधिक रोचक व मनोहर थे परन्तु इनमें जीवन के संघर्ष व जीवन की वास्तविकता पर कोई जोर नहीं दिया गया। अतः प्रेमचन्द ने इनके मध्य मार्ग पर गमन कर संघर्षमय जीवन व जिन्दगी की वास्तविकता का पर्दाफाश किया।प्रेमचन्द ने उर्दू, हिन्दी आदि भाषाओँ में कहानियाँ लिखी। इनकी प्रथम कहानी ''पंच–परमेश्वर'' है। इस कहानी में प्रेमचन्दजी ने यथार्थवादी चोले के भीतर से एक उच्च आदर्श की स्थापना की। इसके पश्चात इन कहानियों ने देश–विदेश मैं तहलका सा मचा दिया इनकी श्रेष्टकहानियाँ जो कि विश्व प्रसिद्ध कहानियाँ मानी जाती है, ये हैं –"शतरंज के खिलाडी'', ''कफन'', ''आत्माराम'', ''पूस की रात'' आदि।इनकी कहानी कला का अनुकरण अत्यधिक व्यापक पैमाने पर हुआः सुदर्शन, शिवपूजन सहाय, पदुमलाल पन्नालाल बख्शी, बैचेन शर्मा उग्र, भगवतीप्रसाद बाजपेयी, वृंदावनलाल वर्मा, इलाचन्द जोशी आदि प्रमुख हैं, इतना ही नहीं निराला, महादेवी वर्मा आदि प्रमुख कवियों ने भी कहानियाँ लिखी। अर्थात इस युग में तो कहानीकारों की बाढ़ सी आ गयी थी, परन्तु प्रेमचन्द ने जो लिखा वह किसी और ने नहीं इसलिए उन्हें ''युग सृष्टा'' कहा जाता है।

३. प्रगति युग

प्रसाद युग व प्रेमचन्द युग दो अलग अलग विषयों के सोपान हैं। प्रसाद युग में कहानियों में काव्य का सा आनन्द प्राप्त होता है तो दूसरी और प्रेमचन्द युग में अंतर्मन को कचोटता हुआ साहित्य। परन्तु प्रगति युग पर मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद आदि का प्रभाव पढ़ा व इसमे'' ''मनुष्य की मानसिक–धरातल को वैज्ञानिकता की कसौटी पर परखा जाने लगा और नैतिक आचार–विचार और आदर्शवादी धारणाओं को कुंठित वासनाओ और दमित–यौन भावनाओ'' के परिवर्तित रुप में देखा जाने लगा।6इस प्रकार इस

युग में दो प्रकार की प्रमुख रचनाएँ लिखी जाने लगी। मार्क्सवादी व मनोविश्लेषणवादी। मनोविश्लेषणवादी कहानियों मैं इलाचंद्र जोशी इस युग के प्रमुख कहानीकार हैं। इनकी कहानियों में कुंठाग्रस्त और विक्षिप्त पात्रों के मनोभावों की कुशल अभिव्यक्ति दिखाई देती है। ''रोमैन्टिक छाया'', ''खण्डहर की आत्माएँ'', इनकी प्रसिध्द कहानियाँ है। इसके पश्चात अज्ञेय व जैनेन्द्र इस युग में उभरे जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण नवीन शैलीमें लेकर आये। इनकी प्रमूख कहानियाँ है ''अपना अपना भाग्य'', ''मास्टरजी'', ''जाह्मदींश, ''पत्नी'', ''एक रात'' आदि हैं। ''अज्ञेय'' इस धारा के प्रतिनिधि कहानीकार माने जाते हैं। इनकी कहानियों फ्रायड विचारधारा पर आधृत है। इनके अनेक कहानी संग्रह हैं जो इनकी कहानियों के प्रमाण दर्शाते है। ''त्रिपयगा'', ''कोठारी की बात'', ''परम्परा'', ''दो बांके'', ''खिलते फूल'' आदि। इस युग के अन्य कहानीकार हैं उपेन्द्रनाथ अश्क, निराला, पहाड़ी, अंचल, यशपाल, राहुल सांस्कृ त्यायन, रंगेयराघव, नरेन्द्र वर्मा, प्रभाकर माचवे आदि।

४. नई कहानी युग

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन 1952 से कविता में ''नई कविता नामक धारा को प्रोत्साहन मिल रहा था। इस धारा ने साहित्य को एक नये रूप से देखना प्रारम्भ किया। इसका प्रभाव कहानी पर अत्यधिक रूप से पड़ा। प्रारम्भ में इस युग को प्रयोगवाद युग के नाम से संबोधित किया जाने लगा परन्तु इसमें सभी प्रकार के प्रकरणों का समावेश होने के कारण इसे ''नई कहानी युग'' कहा जाने लगा। इन कहानियों को समकालीन कहानी, नई कहानी, अकहानी आदि कहा गया। इसने कई प्रकार के कहानीकार उभरे व दिन प्रति दिन उभरते जा रहे है। राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, शिवप्रसादसिंह, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, मन्नु भंडारी, उषा प्रियवंदा आदि प्रमुख हैं।

शंकरलाल जायसवाल के अनुसार ''कहानी जीवनगत संबंधों, सत्यों एवं रहस्यों को समझने का सरल माध्यम है, जिसके द्वारा हमारी शंकाओं का समाधान, प्रश्नों का उत्तर तथा अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होने के साथ साथ हमारे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का विश्लेषण होता है।[7] ''सामाजिक बदलाव और भटकन के इस इतिहास और उसकी यथार्थ गाथा क्रो अगर कोई हिन्दी साहित्यिक विधा सही वाणी देने में समर्थ हुई तो वह है हिन्दी कहानी। शहरी और ग्रामीण जीवन की विसंगतियों का मध्यवर्गीय, उच्चादर्शी और मध्यवर्गीय जीवन की कुंठा, संत्रास, व्यक्तिवादीता, मृत्युबोध, आर्थिक विषमता, सामाजिक विसंगति, स्त्री पुरूष के संबंध टूटते परिवार आदि सभी की कथा ही इन कहानियों में मुखर है। यशपाल, अज्ञेय, जेनेन्द्र, जोशी आदि यद्यपि नए कहानीकारों की श्रेणी में तो नहीं आते पर उनकी कहानियाँ ही वह नींव है जिस पर नयी कहानी का भव्य महल निर्मित हुआ है। इनकी कहानियों में संयुक्त परिवार की टूटन, वृद्धों की उपेक्षा, वैयक्तिकता, सेक्स, नारी और पुरूष के नए संबंधों की वह व्याख्या मिल जाती है जो स्वतन्त्रता के बाद के भागमभाग जीवन की नियति बन जाती है और जिसका वर्णन ही नयी कहानी है।[8] ''अनेक कहानीकारों ने अपनी कहानियों में समाज में आदर्श की स्थापना की हे जैसे अमरकान्त, अज्ञेय, गुप्तजी, मन्नु भंडारी, यशपाल, उषा प्रियवंदा, महादेवी वर्मा आदि प्रमुख हैं। इन्होंने अपनी अपनी कहानियों में यथार्थवादी सामाजिक आदर्श की स्थापना की है। वस्तुतः परिवेश के प्रति प्रतिबद्धता का भाव नयी कहानी में ही उत्पन्न हुआ है इसमें व्यक्ति के माध्यम से परिवेश और परिवेश के माध्यम से व्यक्ति खोजा गया है। उसकी प्रामाणिकता के साथ आजादी के बाद हमारे पारिवारिक संबंधों में आये परिवर्तन को नयी कहानी भी रूपायित कर पायी है। परन्तु नयी कहानी का उदृघोष था कि व्यक्ति को उसके परिवेश से अलग न देखा जाए है। वस्तुतः नयी कहानी ने सामाजिक संदर्भो की परिवर्तित स्थितियों को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करने के लिए परिवेश की प्रामाणिकता को विस्मृत नहीं किया।[9]

सामाजिक बोध के बिन्दू मुख्य रूप से सामाजिक, आर्थिकऔर वैचारिक जीवनसे जुडे हुए है। सामाजिक स्तर परगाँव, शहर और महानगर सभी में जातिवाद, प्रान्तवाद भाग्यवाद, कर्मकाण्ड, नैतिक–अनैतिक आदि धारणाओं का संघर्ष था। आर्थिक क्षेत्र में विषमता, गरीबी बेकारी पूँजीवाद आदि की समस्याएँ थी जिनको पूरा देश झेल रहा था और वैचारिक स्तर पर आधुनिकता, अंतराष्ट्रीय बौद्धिकदबाव एवं विश्व राजनीति के व्यापक प्रभाव थे। सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन ओर धार्मिक मान्यताओं के खण्डन से समाजिक चेतना विकसित हो रहीं थी। जो समाजगत यथार्थ के इस
व्यापक परिवेश से ऊपर थी स्वराज्य–कल्पना के रूप में प्रजातंत्र की अखण्ड ज्योति। सुख समृद्धि और शाक्ति के सपनों में अन्तर्विरोध ही वह बिन्दू था जहाँ से समकालीन समाजिक बोध की शुरूआत होती है। नयी कहानी में इन्हीं स्थितियों से सम्प्रक्त बोध के रूप में अपनी वैचारिक धारणाओं को मान्यता दी। ''नयी कहानी या आधुनिक कहानी ने आधुनिकता, यथार्थता, आदर्शवादिता आदि सभी का सम्मिश्रण पेश किया इन्होंने आदर्श को कल्पनालोक का अधिकार न मानकर इसे यथार्थवाद का भी पूर्णरूपेण अधिकारी माना है। यथार्थवाद को महत्त्व देने के कारण ही इन कहानियों का प्राचीन कहानियों की अपेक्षा अधिक योगदान है। प्रत्येक व्यक्ति आत्मा की आवाज के अनुसार ही अपना आचरण, कार्य सुचारू रूप से करता है। यदि आत्मा की आवाज देश में हो रहे अत्याचारों, कुरीतियों आदि के सापेक्ष में है तो वह लेखक उनसे दूर जा ही नहीं पायेगा और यदि वह दूर जाने की चेष्टा करेगा भी तो साहित्य का सृजन अच्छी लगन से नहीं हो पायेगा। इस प्रकार रचित साहित्य निम्न कोटि का साहित्य माना जायेगा। अतः समाज में रहकर समाज से दूरी तय कर लिखना असंभव सा प्रतीत होता है। पूर्व काल में समाज से दूर ही साहित्य या कहानी की रचना हुई परन्तु आज की कहानी पूर्णरूपेण सामाजिक कहानी ही है। समाज महत्वपूर्ण है। वह इस देश का प्रमुख हिस्सा है वह मानवता से जुड़ा है। आधुनिक कहानी में जिन परिवर्तित सन्दभों का स्पष्टीकरण किया गयाहै उसमें से अधिकांश स्थितियाँ किसी व्यक्ति या देश विशेष की न होकर मानवता की ही है। इन मानवीय संकट के यथार्थ क्षणों का स्पष्टीकरण कर आदर्श की स्थापना की गई है। इन कहानियों, को पढकर व्यक्ति कुछ क्षण तो सोचने पर मजबूर हो जाता है कि वास्तव में ऐसा नहीं होना या करना चाहिए। वर्तमान में इन्हीं कहानियों का समाज मे उच्च स्थान है। इससे अनेक परिवर्तन होते आये है, व हो रहे हैं।

वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में सबसे बडा परिवर्तन स्त्री –पुरूष संबंधों में घटित हुआ है। नारी–शिक्षा और उस शिक्षा से प्राप्त स्त्री का आर्थिक स्वावलम्बन, इन दोनों स्थितियों ने स्त्री –पुरूष संबंधों के समस्त समीकरणों को बदल दिया है। घर की चारदीवारी की लक्ष्मण रेखा को लांघ आयी नारी ने पारम्परिक मूल्यों को ध्वस्त कर विवाह और प्रेम संबंधों को भी नई मान्यताएं दी है। नारी के व्यक्ति स्वातंत्रय के प्रश्न को यहाँ प्रायःप्रत्येक कहानी में नये नये अनुभव के आधार पर प्रतिस्थापित किया गया है। स्त्री–पुरूष के लिए निर्धारित दुहरे नेतिक मानों को यहाँ गंभीर रूप से और खूब खुलकर चुनौती दी गयी। प्रेम करना जिस प्रकार और जितना पुरूष का अधिकार था अब वह उतना ही नारी का अधिकार बना इसलिए प्रेम और काम–सम्बन्धों, वर्जनाओं (टैबूल) और अवरोधों (इनहिबिशन्स) की पूरी तरह नकार कर देह–धर्म की ईमानदारी से स्वीकारा गया। योन–शुचिता की पारंपरिक मान्यताएँ कहानी में खण्डित हुई और एक प्रकार से निबन्ध यौन –जीवन की स्वीकृति के पक्ष पर भी लिखा गया। स्त्री–पुरूष के बदले हुए रिश्तों के इस समीकरण में दांपत्य संबंधों में एक अलगाव, तुर्शी और टूटने की

स्थितियों आना स्वाभाविक था। संबंधों के इन विविध रूपों को पर्त–दर–पर्त उघाड़ागया, प्रत्येक स्थिति यहाँ सूक्ष्मतिसूक्ष्म रूप में चित्रित है। विवाह पूर्व प्रेम दाम्पत्य मेश तीसरे व्यक्ति की आशंका और स्थिति, दाम्पत्य की दरकन, टूटन और टूट जाने के बाद की स्थितियां, ऐसी स्थितियों में संतान की मनः स्थिति आदि न जाने कितने अनुभवपाठक के सामने समकालीन कहानी के माध्यम से आये है। स्त्री– पुरूष के बीच इन वर्तुल सम्बन्धों पर एक से एक सशक्त कहानिया लिखी गयी। औद्योगिक सभ्यता में विज्ञान और प्रोद्योगिकी के बढते प्रभाव ने प्रेम, सात्विक प्रेम के लिए अनावश्यक स्थितियों को विलुप्त कर दिया, फलतः स्त्री –पुरुष संबंध ही नहीं सभी संबंधों मैं निस्वार्थ प्रेम का लोप हो जाने की त्रासद स्थितियों को समकालीन कहानी ने वाणी दी है।[10]

हमारे समाज की नैतिकता व आदान का मूल प्रयोजन समाज में सुव्यवस्था बनाये रखना है और उनकामूल आधार समाज का आर्थिक ढांचा है और आर्थिक ढांचे से अभिप्राय है समाज के व्यक्तियों के पारस्परिक संबंध जिनके आधार पर समाज अपने जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं को पैदा करके उपयोग के लिए उनका बटवारा करते हैं। ऐसे संबंधों के खोज की रक्षा को ही हम अहिंसा नैतिकता और न्याय का नाम देते हैं। हमारे समाज की कहानी इस बात का निर्विवाद प्रमाण है।[11]

कहानी ही हमारे समाज के आदर्शोको सुरक्षित रखे हुए है। व्यक्ति कहानी में आदर्शो का वर्णन पढकर स्वयं को भी आदर्शवादी बनाने का प्रयत्न या चेष्टा करता है वह चाहता है कि काश मई ही इस कहानी का नायक या मुख्य पात्र होता। जीवन में यदि वही क्षण उसे मिल जाता है तो वह उस कहानी को याद कर स्वयं भी अपना एक आदर्श स्थापित करने की सोचता है इसके विपरित यदि वह वही गलती कर रहा हो जो उस कहानी के नायक, नायिका या अन्य पात्र ने की हो तो वह अपनी गलतियों की सुधारने का प्रयत्न अवश्य करेगा।इस प्रकार विकास क्रम का सामाजिक परिवर्तन के साथ सीधा सम्बन्ध है और कहानी परिवर्तन हेतु उत्तरदायी भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी कहानियाँ एक आलोचनात्मक अध्ययन, डॉ. श्रीकृष्णलाल (पृष्ठ २१)।
2. गाँधी दर्शन मीमांसा १९७३ (पृष्ठ ५१)।
3. हिंदी कहानी का उद्‌भव एवं विकास, डॉ. सुरेश सिन्हा (पृष्ठ४३)।
4. प्रसाद साहित्य में शैव दर्शन, डॉ. आशा अग्रवाल (पृष्ठ ३६)।
5. प्रसाद साहित्य में शैव दर्शन, डॉ. आशा अग्रवाल (पृष्ठ ३८)।
6. हिंदी कहानियाँ एक आलोचनात्मक अध्ययन डॉ. श्रीकृष्णलाल (पृष्ठ ३६)।
7. हिंदी गद्य साहित्य पर समाजवाद का प्रभाव, डॉ. शंकरलाल जायसवाल (पृष्ठ २२१)।
8. नयी कहानी और माध्यम वर्गीय जीवन, डॉ. कामेश्वर प्रसाद सिंह (पृष्ठ २५३–५४)।
9. नयी कहानी और माध्यम वर्गीय जीवन, डॉ. कामेश्वर प्रसाद सिंह (पृष्ठ २५५)।
10. समकालीन हिंदी कहानी डॉ. पुष्पपाल सिंह (पृष्ठ २३३)।
11. प्रतिनिधि हिंदी कहानियां, डॉ. राजनाथ शर्मा (पृष्ठ १९१)।